पेरिस
अगस्त २२, २००८

सन्देश संख्या १५३
धार्मिकता, जो उधारी है,
भगवत्ता के प्रस्फुटन हेतु विनाशकारी है

तुम कुछ हो ही नहीं । अतः रूपान्तर के लिए भी कुछ नहीं है, परिवर्तन के लिए भी कुछ नहीं है, किसी से मुक्ति की भी कोई आवश्यकता नहीं है । जीवन तो मुक्त है, अपरिवर्तनशील है, सत्य है, जिसमें रूपांतरण का कोई अर्थ ही नहीं है । तुम जीवन हो ! किन्तु जीवन के संदर्भ में तुम्हारे जो विचार हैं, वे मात्र विचार है; 'तुम' नहीं एक बात और, तुम जीवन को कभी नहीं जान सकते । तुम्हारे समस्त ज्ञान विभाजन हैं, बन्धन हैं । इसलिए ज्ञातातीत अवस्था और निर्विकार सजगता ही कृपा है । जीवन निर्विकार से ही निर्विकार की यात्रा है । स्यात् इसीलिए ईसा मसीह को घोषणा करनी पड़ी थी कि केवल अबोल शिशु ही स्वर्ग के राज्य में प्रवेश के अधिकारी हैं । तुम जीवन की झलक तभी पा सकते हो जब तुम निपट निराधार, निर्बल और निराश्रयी हो जाते हो, जब तुम निर्विचार, निःशब्द, निर्वाक् हो जाते हो, यहाँ तक कि वहाँ समस्त प्रकार के धार्मिक विचार भी अस्त हो जाते हैं । विभेदकारी चित्तवृत्ति को सतत् बनाये रखने हेतु तुम्हारी उधारी जानकारी, तुम्हारे विचारों के अन्तहीन छल–प्रपंच एवं धूर्तता ही तुम्हारा होना है, और उसे ही तुम 'मूर्ख तुम' या 'बुद्धिमान तुम' समझते हो । तुम्हारे आंतरिक साम्राज्य में इनके अतिरिक्त और क्या है, कुछ भी तो नहीं । क्या तुम सुन रहे हो?

जिसे तुम 'मैं' कहते हो वह 'भय' है । 'मैं' इसी 'भय' की सृष्टि है, यह 'भय' से ही उत्पन्न होता है, स्वयं को 'भय' में ही कायम रखता है, 'भय' में ही गति करता है और 'भय' में ही मिट जाता है । परन्तु 'मैं' और 'भय' के मध्य लय सम्भव है और तभी दोनों के मध्य का मिथ्या द्वैत समाप्त हो जाता है । यही लय योग, अद्वैत वेदान्त और क्रियायोग का ईश्वर प्रणिधान है । इसकी समझदारी के बिना यान्त्रिक रूप से क्रिया–अभ्यास करना निरर्थक है । तुम सर्वदा सीमित और बन्द हो । जब तक तुम 'तुम' हो, यह तुम्हें वास्तविकता समझने से वंचित रखता है । जो कुछ भी तुम अनुभव करते हो, वह विचार–प्रेरित है । अतः तकनीकी सन्दर्भों के अतिरिक्त किसी अन्य अनुभव की चर्चा मत करो। सभी आध्यात्मिक एवं धार्मिक अनुभव और तुम्हारा प्रबोध पाखण्ड, विभ्रान्ति एवं अपवित्र है । वस्तुतः तुम चाहते क्या हो? जब तक तुम सभी प्रकार की इच्छाओं यानि कि प्रबोध, मोक्ष, मुक्ति आत्म–ज्ञान आदि की प्राप्ति की आकांक्षा से मुक्त नहीं हो जाते, तुम दयनीय ही रहोगे । पुरोहित–वर्ग के तथाकथित धार्मिक विचारों ने मानव–जाति के लिए ऐसे अनुरोधों एवं ऐसी परिस्थितियों को जन्म दिया है कि आज मनुष्य जाति मानसिक रूप से असन्तुलित हो गयी है । जब चित्त से इन अवरोधों को सर्वथा नष्ट कर दिया जाता है तब एक अद्‌भुत अखण्ड भाव और ऊर्जा का आविर्भाव होता है । तथाकथित धार्मिकता ही वह मूढ़ता है जिसने मानव–जीवन को नरक बना दिया है । चित्तवृत्ति के झूठे विभाजन से उत्पन्न हर चीज, 'मैं' को ही सतत् बनाये रखना चाहती है तथा जो अन्ततः विध्वंसकारी ही होती है । अतः न तो किसी प्रकार का कोई 'धार्मिक चिन्तन' ही मनुष्य की रक्षा कर सकता है और न ही नास्तिकता, साम्यवाद अथवा अन्य वह कोई सिद्धान्त, जिसकी निर्मिति मनुष्य के अहंकार द्वारा निहित स्वार्थवश हुई है । अतः पता लगाओ कि समझदारी की ऊर्जा की अवस्था में रहना संभव नहीं है क्या? समझदारी की यह ऊर्जा मानव–चित्तवृत्ति में विद्यमान द्वन्द्वों की अज्ञानता से उत्पन्न नहीं होती ।

विख्यात संगीतज्ञों 'बिटल्स' में से एक ने एक अत्यन्त गम्भीर गीत गाया है । वह गीत मूलतः अंग्रेजी में है, उसका हिन्दी अनुवाद नीचे प्रस्तुत है –

सोचिए, कहीं कोई स्वर्ग नहीं,
नीचे नरक भी नहीं,
आसान है यदि करें प्रयास,
क्योंकि, नीचे धरती है, ऊपर आकाश।
सोचिए जीयें केवल आज के लिए
विश्व के लोग सभी।
सोचिए, कोई देश–भेद नहीं,
ऐसा करना कठिन भी नहीं,
जरूरत नहीं किसी को मारने की,
न किसी के लिए मरने की,
और न ही किसी धर्म की।
सोचिए जीवन जीयें शान्ति से
विश्व के लोग सभी ।
कह सकते हैं आप, मैं हूँ स्वप्नदर्शी,
लेकिन मैं अकेला नहीं ।
आशा है एक दिन आप होंगे हमसे सहमत
और सम्पूर्ण विश्व होगा एक परिवार
आपस में अविभाजित ।
सोचिए, कहीं कोई संग्रह नहीं,
यदि आप कर पाते ऐसा,
फिर न होगा लोभ और न होगी भूख,
होंगे सभी लोग भाई–भाई जैसा ।
सोचिए, मिल–बाँटकर रहने लगें
विश्व के लोग सभी ।
कह सकते हैं आप, मैं हूँ स्वप्नदर्शी,
लेकिन मैं अकेलाा नहीं।
आशा है, एक दिन आप होंगे हमसे सहमत,
और सम्पूर्ण विश्व होगा एक परिवार
आपस में अविभाजित ।

।। जय विश्व ।।